भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 05 | उदयपुर मंगलवार 15 मार्च 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

होली पर रंगीला राजस्थान

राजस्थान रंगों का प्रदेश कहा जाता है। त्यौहारों पर तो इन रंग-रूपों का खासा मेला भर जाता है। होली, दीवाली, दशहरा, गणगौर जैसे त्यौहारों में केवल होली ही ऐसा त्यौहार है जहां लोकानुरंजन के अधिकाअधिक रूप लोकजीवन की रंगीनियों को स्वस्थता प्रदान करते हैं। अनुरंजन के इन रूपों में ख्याल-तमाशे, स्वांग-स्वरूप, गैर-गींदड़, बनोली-सवारी तथा रम्मतों के रसियों के ठाठ उल्लेखनीय हैं।

बीकानेर तथा जैसलमेर की रम्मतें :

बीकानेर तथा जैसलमेर की ओर जो ख्याल प्रदर्शित किए जाते हैं, वे रम्मत के नाम से जाने जाते हैं। होली के आसपास फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से चतुर्दशी के बीच इनका आयोजन किया जाता है। इन रम्मतों में बीकानेर की रम्मतें सर्वाधिक लोकप्रिय रही हैं। यहाँ के प्रमुख-प्रमुख मोहल्ले, चौक तथा गुवाड़ इन रम्मतों के प्रसिद्ध अखाड़े रहे हैं। इनमें पुष्करणा ब्राह्मण विशेष रूप से भाग लेते हैं। ख्यालों के अलावा स्वांग तथा सवारियों के रूप में भी ये रम्मत प्रर्दाशत की जाती हैं। प्रदर्शन के एक दिन पूर्व रात को बनोली के रूप में रम्मत की छींकी निकाली जाती है। रम्मतों में हिड़ाऊमेरी की रम्मत अत्यन्त प्रसिद्ध रही हैं।

इन रम्मतों के लिए अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग मंच बनाए जाते हैं।

बीकानेर की रम्मत

साधारणतया तख्ते रख दिए जाते हैं। कहीं खाली जमीन पर ही इनके प्रदर्शन दिए जाते हैं। कहीं-कहीं पात्रों के बैठने के लिए कुर्सी आदि की व्यवस्था कर दी जाती है। जैसलमेरी रम्मतें प्राय: धरती पर ही प्रर्दाशत होती रही हैं। यहां तेज कवि इन रम्मतों के प्रसिद्ध लेखक हए हैं। उनकी वंश परम्परा में नंदकिशोर शर्मा सक्रिय हैं।

ब्यावर की बादशाह की सवारी :

होली के दूसरे दिन ब्यावर में बादशाह की सवारी का भव्य आयोजन रहता है। इस शाही सवारी में दो बादशाहों के लिए अलग-अलग दो पालकियां सजाई जाती हैं। बीरबल इन पालकियों के आगे नाना-प्रकार के नृत्याभिनय करता हुआ दर्शकों को लोट-पोट कर देता है। दूर-दूर तक के लोग इसमें भाग लेने के लिए मचल पड़ते हैं।

सभी एक-दूसरे पर इतना गुलाल छिड़कते हैं कि सारे आकाश में गुलाल-ही-गुलाल उड़ता हआ दिखाई देता है। औरतें भी अपने-अपने घरों, छतों तथा झरोखों से मुट्ठियां भर-भर इतना गुलाल उड़ाती हैं कि जमीन पर चार-चार अंगुल की तह जम जाती है। यह सवारी डिक्शन साहब की छतरी से प्रारम्भ होकर अन्त में कचहरी जाकर समाप्त होती है।

शेखावाटी में गींदड़ :

गींदड़ का खेल

इन्हीं दिनों शेखावाटी की ओर गींदड़ घालने की बड़ी स्वस्थ परम्परा रही है। गीदड़ प्रहलाद की अग्नि से रक्षा की खुशी में घाली अथवा नचाई जाती है। इसके लिए विशेष प्रकार का मण्डप बनाया जाता है। इसे रंग-रंगीली पताकाओं, झालरों, फूलपत्तियों तथा गत्तों की चित्ताकर्षक त्रिद्वारियों के रूप में बड़े कलात्मक ढंग से सजाया जाता है। गींदड़ में नाना-प्रकार के स्वांग प्रर्दाशत किए जाते हैं। वाद्यों में प्राय: नगाड़ा काम में लाया जाता है।

कोटा-सांगोद का न्हाण :

होली पर आयोजित शाही सवारियों में न्हाण की सवारी का भी विशेष महत्त्व रहा है। न्हाण की यह सवारी कोटा तथा सांगोद की विशेष रूप से प्रसिद्ध रही है। न्हाण में मुख्यतया जागीरदार लोग पूरा-पूरा हिस्सा बंटाते थे और वे ही इसका आयोजन करते थे। होली के बाद न्हाण की सवारी के आयोजन प्रारम्भ हो जाते। पहले दिन शाही सवारी का भव्य जुलूस निकाला जाता। बादशाह की पालकी सजाई जाती। घोड़ों पर उमरावों के

बादशाह की सवारी

बसी का बारूदी ख्याल

स्वांग भर जाते। इस अवसर पर प्रदर्शित झांकियों की शोभा भी निराली लगती है।

बसी का बारूदी ख्याल :

रंगभरी पिचकारियों से तो होली खेली ही जाती है पर बारूद की भूंगलियां भर-भर होली खेलने वाले शूरमा भी राजस्थान के बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। होलीथड़ा पर जमराबीज को बारूद का यह ख्याल चित्तौड़ के पास बसी गांव में खेला जाता था।

प्राय: प्रत्येक घर से एक-एक व्यक्ति इसमें भाग लेता था। अपने शरीर को चिकनी काली मिट्टी तथा तप्पड़ के बोरों से ढककर सारे जवां मर्द खेल के लिए उतर पड़ते। पिचकारियों की तरह एक-दूसरे पर जलती हई भूंगलियों का वार किया जाता और पूर्ण निष्ठा के साथ बड़े-बूढ़े अपनी जान की बाजी लगा देते।

न्हाण की सवारी

किसी खिलाड़ी की मृत्यु हो जाने से यह खेल बन्द कर दिया गया मगर आज भी बसी के प्रत्येक खिलाड़ी में वही उबाल, जोश और भावना बलवती बनी बैठी है जो समय आने पर फिर कभी बारूद की भूंगलियों लिए मचल पड़ेंगी।

उदयपुर की सवारी और स्वांग :

उदयपुर की होली का अपना विशिष्ट रूप रहा है। यहां की 'डाकी की सवारी' किसी समय राजस्थान में विशेष प्रसिद्ध थी। उल्टी खाट पर किसी मनचले व्यक्ति को बैठा कर उसे तप्पड़ का चोला पहना दिया जाता था तथा मिट्टी आदि पोत कर विकृत एवं भद्दा बना दिया जाता था। चेहरे को पूरा काला रंग दिया जाता था। इसे सभी डाकी कहते थे और इसकी शानदार सवारी निकाली जाती थी।

जमराबीज को तीज के चौक में रात्रि को होलीथड़े जमर खांडने का दृश्य दिखाया जाता। मीणियां आकर जमरे खांडती और रींछ तथा नार (शेर) के स्वांग भर कर जनता में हूड़दंग मचा देती। पंचमी को सायंकाल बद्दू भगतण के दरवाजे से सांडीवाल मुसलमानों की ओर से ढोलामारू का स्वांग निकाला जाता। राज्य की ओर से पुलिस, फौजदार, जमादार, छड़ीदार आदि भी इसमें शरीक होते।

एक ढोला तथा दो मारुणियां ऊंट पर स्वांग निकालती। इनके साथ एक साधु भी अपने अलग ऊंट पर होता। वह 'खललल-खललल' हंसता हुआ दूसरों को भी खूब हंसाता। महलों में ये लोग राणाजी को मुजरा अर्ज करने पहुंचते। इनके अलावा महलों में चरवादार हाथी का स्वांग लाते और तामजामी भोई रींछ तथा मदारी बन कर आते। आसपास तथा दूर-दूर की जनता देखने के लिए उमड़ पड़ती।

सारे राजस्थान में होली पर नाना स्वांग-रूपों की परम्परा रही है। राजदरबार में होली पर दरबार का विशेष आयोजन किया जाता था। इस अवसर पर जागीरदार, सरदार, उमराव तथा अन्य मुसाहिबों को राजदरबार की ओर से खांडे भेंट किए जाते थे। ये खांडे लकड़ी के बने होते थे जिन पर विविध रंगों की चित्रकारी की हुई रहती थी।

- म. भा.

होली के बाद व्रत-कथाओं का दौर

- डॉ. कविता मेहता -

होली से लेकर गणगौर तक का समय विविध धर्मानुष्ठान का है। इन दिनों महिलाएं संयमित जीवन जीते हुए अपना पूरा समय धर्ममय कर्म में गुजारती हैं। व्रत करके कथा कहती हैं और पूरे अनुष्ठान से उनका समापन करती हैं। यह सब करने के पीछे उनका सौभाग्यवती बने रहकर पारिवारिक सुख-सम्पदा की वृद्धि तथा मंगल मांगल्य बना रहने की भावना ही प्रमुख रहती है। दशामाता की कहानियों पर कई वर्ष पूर्व मैंने पीएच.डी. प्राप्त की थी। वह पुस्तक 'राजस्थान की लोकव्रत संस्कृति' नाम से प्रकाशित हुई।

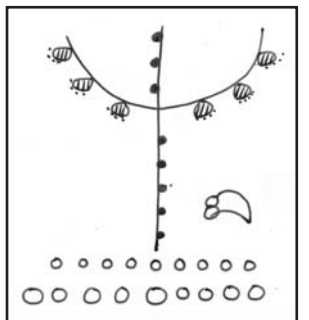
दीयाड़ी माता का थापा

उदयपुर के राजमहल की मुख्य सडक पर जगदीश मंदिर के आगे बद्दू भगतण का दरवाजा प्रसिद्ध है। इससे प्रवेश करने पर भीतर पूरी बस्ती बसी हुई है। पापा डॉ. महेन्द्र भानावत के साथ 14 अप्रेल 1976 को यहां निवास कर रही अम्बाबाई गुजरगौड़ (80) से उनके निवास पर भेंट की। यहीं नाव घाट पर रह रही गायिका नारायणीबाई ने उनसे भेंट कराई।

अम्बाबाई बड़ी जानकार और आस्थावान महिला थीं। कहानियों का पूरा भंडार थीं। उनके मकान में विविध थापे भी दीवालों पर बने देखे। उनका पूजा विधान तथा कहानी कथन महिलाओं की जीवनधर्मिता का आवश्यक अंग था जिसके पीछे उनके सौभाग्यवती बने रहने तथा परिवार में खुशहाली और आनंद ठाठ रहने का प्रबल भाव था।

कूकड़-माकड़ का व्रत :

अम्बाबाई ने बताया कि भादवासुदी आठम, राधा अष्टमी को ऊंकार्‌या आठम के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन कवेलू पर मिट्‌टी की कूकड़ माकड़ बना पूजा करते हैं। कूकड़ माकड़ के रूप में कूकड़ के 5 अंडे तथा माकड़ के 108 अंडे बनाते हैं। महिलाएं आठ वर्ष तक इस दिन व्रत करती हैं और उसकी उझमणी यानी समाप्ति पर आठ जोड़े, पति-पत्नी को भोजन कराती हैं। प्रत्येक जोड़े को जीमाने के उपरान्त चांदी का कान में पहनने का आभूषण, ऊंकार्‌या तथा कापड़ा देती हैं। व्रतार्थी महिला के लिए इस दिन उसका भाई सोने का बना ऊंकार्‌या लाकर पहनाता है। यह आजीवन पहना रहता है बल्कि मृत्यु के बाद भी नहीं खोला जाता है। इस समय कूकड़ माकड़ की कहानी कही जाती है। अम्बाबाई ने यह कहानी सुनाई-

कूकड़ माकड़ दोनों बहिनें थीं। दोनों साथ रहतीं। एक दिन डूंगर पर दावाग्नि से कूकड़ अपने बच्चे को छोड़ उड़ गई। दावाग्नि में माकड़ भस्म हो गई। दोनों बहिनों ने अगला जन्म ब्राह्मण के घर लिया। ब्राह्मण ने एक को अपनी जाति में तथा दूसरी को राजा के घर विवाह दी। ब्राह्मण के वहां विवाहिता के पांच संतानें हुईं पर राजा के वहां वाली के कोई संतान जीवित नहीं रहती। इस पर उसने अपनी बहिन पर शक किया कि उसी ने कोई कामण-टोटका कराया होगा। उसने राजा से कहा कि वे अपनी बहिन के पांचों लड़कों की हत्या करा उनके मुंड मंगवायें अन्यथा गोखड़े से कूदकर वह अपने प्राण त्याग देगी।

राजा ने डावड़ी के साथ जहर के लड्‌डू भेजे पर बालकों पर कोई असर नहीं पड़ा। सांप गोइरे भेजे जिनसे बच्चे खेलने लगे। इस पर राजा उन्हें शिकार पर ले गया जहां उनके मुंड काट लाया। रानी ने उन्हें घर में टोकरे के नीचे छिपा दिये। उधर शिव-पार्वती जोगी तथा बिल्ली बन निकले। जोगी भीख मांगने लगा, कहा कि भीख दो नहीं तो श्राप दूंगा। रानी डरी। उधर बिल्ली रूप पार्वती टोकरे से बच्चों के मुंड निकाल लाई। उन पर अमृत का छींटा दिया जिससे वे जीवित हो उठे। रानी ने टोकरा ऊंचाया पर कुछ नहीं मिला।

उन्हीं दिनों रानी के लड़की हुई पर तत्काल मृत्यु को प्राप्त हुई। रानी ने सोचा कि बहिन मिलने आयेगी तो उस पर यह मौत थोप दूंगी। बहिन आई। उसकी गोद में लेते ही लड़की जीवित हो गई। बहिन बोली, पूर्वजन्म में अपन दोनों बहिनें थीं। कूकड़ माकड़ नाम था। डूंगर पर दावाग्नि लगी तो तू अपने बच्चों को छोड़ भागती बनी। इस पर तेरे दोष लगा जो अब भोग रही हो। मेरे आसमाता का इष्ट था सो मैं बाल-बाल बची रही। ए आसमाता ! तू ब्राह्मणी पर जैसी तुष्टमान हुई वैसी सब पर होना और रानी जैसी बेअक्ल किसी को मत देना।

दाड़ा बावजी का व्रत :

अम्बाबाई ने दाड़ा बावजी के व्रत और कथा सम्बंधी जानकारी देते बताया कि होली के बाद आने वाले दीतवार को दाड़ा बावजी का व्रत किया जाता है। यह व्रत अलूणा यानी बिना नमक मिले आटे के दो चंदक्ये यानी बड़ा रोट बनाकर पूरा जाता है। इनमें एक रोट सूरज बावजी के सांड यानी गाय के केड़े यानी बछड़े को खिलाया जाता है और दूसरा खुद के लिए बनाया जाता है। इस रोट के बीच का हिस्सा बारी यानी छोटी खिड़की, छिद्र के रूप में खुला रखकर सूरज के दर्शन किये जाते हैं। यह रोट पानी अथवा दही से भी खाया जाता है।

दाड़ा से तात्पर्य दिन से है। दिन के बावजी अर्थात् देवता सूर्य हैं। दीतवार से तात्पर्य रविवार अर्थात् सूर्यवार से है। इस दिन लूम्ये की कहानी कही जाती है। यों दशामाता के दस ही दिन कही जाने वाली कहानियों के अंत में लूम्या की कहानी कही जाती है।

लूम्या की कहानी :

अम्बाबाई ने बताया कि कार्तिक माह में प्रतिदिन जो कहानियां कही जाती हैं तब भी लूम्या की कहानी कही जाती है। करवा चौथ को भी इसकी कहानी कही जाती है। मिगसर माह में भी यह कहानी कहते हैं। इस पूरे माह में दही-भात खाया जाता है।

इससे महिलाओं को श्रीकृष्ण जैसा वर यानी पति पाने का पुण्य मिलता है। कहावत भी है- 'दही-भात खावणो ने श्रीकृष्ण वर पावणो' अर्थात् दही-भात खाना और श्रीकृष्ण जैसा वर पाना।

पूरे माह जमीन पर सोया जाता है। यह महीना गोप महीना कहलाता है। पहले गोपियां जमुनाजी में नंगी नहाती थी। लूम्या श्रीकृष्ण का साथी रहा। इस कहानी का हुंकारा नहीं दिया जाता है। लूम्या की कहानी इस प्रकार है-

श्रीकृष्ण भगवान जमुनाजी के घाट गोपियों के साथ नहाने चले। लूम्या भी साथ चलने की जिद्द कर बैठा। कृष्ण ने कहा, तू मेरे साथ गड़बड़ करेगा।

लूम्या ने कहा, कुछ नहीं करूंगा। वो साथ हो लिया। गोपियां जमुनाजी में नहा रही थी। लूम्या उनके कपड़े लेकर भाग गया। गोपियां निकले तो पहनें क्या? कृष्ण से बोली, हमारे कपड़े कहां गये? आपके साथ कौन था? कृष्ण बोले, लूम्या था। उन्होंने लूम्या को जा पकड़ा। पूछा- गोपियों के कपड़े क्यों ले आया? लूम्या बोला- वे जल में नंगी क्यों नहाती हैं? उन्हें मालूम नहीं, जल में तैंतीस करोड़ देवताओं का निवास रहता है।

कृष्ण बोले, जो हो गया सो हो गया। अब कपड़े लाकर दो। लूम्या बोला- गोपियां जो धर्म करे, उसमें से आधा हिस्सा मुझे दें। मेरे नाम की कहानी कहें। वाटकी भर लड्‌डू का दान करें। घर की डेरी, देहरी में खड़ी रह जो भी दान करें उसका फल मुझे मिले। कृष्ण ने जो कुछ लूम्ये से कहा, सारी बातें स्वीकार कीं तब लूम्ये ने गोपियों के कपड़े जहां पड़े थे वहां कदम्ब की डाल पर जाकर रखे।

दशामाता के व्रत :

अम्बाबाई के वहां घर की दीवाल पर दशामाता, दीयाड़ीमाता तथा चौथमाता के थापे बने देखे। अम्बाबाई ने बताया कि होली के ठीक दूसरे दिन से दस दिन तक दशामाता के व्रत शुरू हो जाते हैं। दस ही दिन कहानियां सुनकर औरतें व्रत पूरती हैं। एक समय भोजन करती हैं। दशामाता का थापा वृक्ष की छाया में बैठ गुलाल को पानी में घोलकर जो गाढ़ा घोल बनता है, उससे दीवाल पर बनाया जाता है। चौखुणे थापे में नीचे से भीतर जाने का मार्ग है। भीतर ऊपर ही ऊपर दोनों कोनों में चांद-सूरज बने हैं। बीच में पीपल का वृक्ष, पास में चौपड़ खेलते महादेव तथा पार्वती।

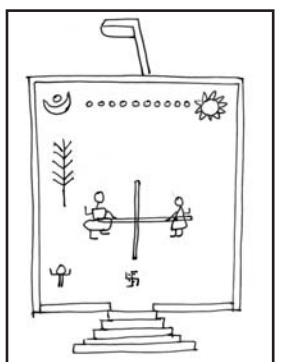
दशामाता का थापा

नीचे सात्या बना हुआ है। सात्ये के पास एक ब्राह्मण का पुतला बना है जो महादेव-पार्वती के जीतने-हारने की साख भरता है। दीयाड़ी का थापा कुंकुम से बना हुआ है। नवमी को पूजने के कारण त्रिशूल बनाकर उसके नीचे नौ बिंदियां लगाई जाती हैं। त्रिशूल के पास गुग्गे का अंकन बना है। अम्बाबाई ने बताया कि यह थापा गुजरगौड़ों में ही बनाया जाता है। बड़ेरों के अनुसार बुढापे में ब्याहे गये दम्पत्ति के लड़का हुआ। कुछ समय बाद ही दोनों चल बसे तब गुग्गे ने उस शिशु को पालपोष कर जीवित रखा। गुग्गे का अर्थ चील से भी है सो कहीं-कहीं चील भी मांडी जाती है। कहीं उल्लू मांडा जाता है।

चौथमाता का थापा

वहीं पर चौथमाता का थापा भी पत्थर की दीवाल में बना देखा। अम्बाबाई ने बताया कि कहीं-कहीं चौथमाता के चंवर ढोलते एक ओर काला भैरु तथा दूसरी ओर गोरा भैरु दिखाये जाते हैं। कई घरों में चौथमाता काच में स्थायी रूप से जड़ी मिलती है।

खांडा-मांडा बिना होली का त्यौहार बांडा

- डॉ. कहानी भानावत -

यूं तो होली का रंग हर प्रांत में निराला होता है, पर राजस्थान की बात ही कुछ और है। राजस्थान में होली के जितने रंग, गैर-गींदड़, ख्याल-तमाशे, स्वांग-सवारी तथा नृत्य-गीतों की विविधावलियां देखने को मिलती हैं, उनसे सवाये रंग घर-आंगन

के भांति-भांति के माण्डनों में रूपायित हुए दृष्टिगोचर होते हैं। इस दिन गरीब से गरीब घर-आंगन भी बोलता, मुस्कराता, प्रसन्न होता हुआ देखा जाता है। गोबर-मिट्‌टी की सौंधी-सौंधी सुवास में लिपे-पुते अध सूखे-हरे आंगन चंग, पगल्या दरी, चौक, थाली, बाजोट, बीजणी, गाडूला, चटाई जैसे नानाविध माण्डनों में रंगे चंगे लगते हैं.

होली का हर सिंगार, मौसम, वातावरण तथा लोकानुरंजनकारी प्रवृत्तियां, इन माण्डनों में मोती पिरोती हैं। चौक के चारों ओर डांडिये, गेंद दड़ी, सातिया तथा चांद सूरज कोरे जाते हैं। गेंद दड़ी तथा गाडूला बच्चों के खेल के प्रतीक तो हैं ही, पर गृहस्थ की गाड़ी के भी द्योतक हैं।

बीजणी होली के पश्चात आनेवाली भयंकर गर्मी में हवा की प्रतीक, थाली, बाजोट सुख, शांति समृद्धि के, पगल्ये लक्ष्मी तथा देवी-देवताओं की प्रतीति के सूचक हैं। इस अवसर पर पेड़ी को सांकली, फूलपत्तियों तथा मोर, तोतों जैसी चिड़ियों से अलंकृत किया जाता है। अपनी शोधयात्राओं के दौरान मैंने रेगिस्तानी इलाकों में जितने रंग झरते, रस छनते माण्डनें देखे, उतने अन्य अंचलों में नहीं। लगा, यहां रेत का हर कण गाता है, बजता है, नाचता, रंग खेलता, ह्रदय उड़ेलता है।

छोटी-छोटी, आठ-आठ वर्ष की बालिकाएं भी बड़े-बड़े बारीक माण्डनों में मगन हैं। कैसे बना लेती हैं बिना किसी नाप-जोख, ज्ञान, शिक्षण-प्रशिक्षण के? यहां की शुष्क लगने वाली प्रकृति कितनी आली-निराली है। हर उम्र रंग जाती है, रस जाती है। गरीब हो या अमीर सबके घर-आंगन रस-रंग में सराबोर होते हैं।

इस दिन तलवार के आकार के लकड़ी के बने खांडे और डांडे, खाती द्वारा घर-घर पहुंचाये जाते हैं। इनकी संख्या घर में पुरुषों की संख्या के बराबर होती है। ये खांडे विविध रंगी चित्रों से कोरे जाते हैं। इनकी मूठ हाथी, घोड़े, शेर, मयूर की आकृति लिये होती है। इन पर होलिका, प्रहलाद, रामदेव, पाबू, गणेश, लक्ष्मी, ढोलामारू, अंबाव, हिरण्यकश्यप तथा जानवरों की लड़ाई के चित्र चित्रित होते हैं।

लोक देवी-देवताओं तथा भक्तों के ये मंगल चित्र राजस्थानी-लोकसंस्कृति और उसके सामाजिक, धार्मिक परिवेश की सच्ची प्रस्तुति हैं। महाराणाओं की ओर से ये खांडे अपने सरदार-उमरावों को भेजने की प्रथा भी रही है। आंगन के मांडनों में भी इन खांडों का प्रचलन रहा है। होली पर चाहे कितना ही रंग हो, यदि खांडा और मांडा (माण्डना) नहीं है, तो यह त्योहार बांडा (रंग विहीन) ही कहलायेगा।

स्मृतियों के शिखर (139) : डॉ. महेन्द्र भानावत

तलवारों की गैर से इतिहास जगाने वाला मेणार

मेणार के वीरबांको ने राजदरबार में पहुंच अर्ज किया कि हम सब अकेले एक-एक सिपाही का योजनाबद्ध तरीके से काम तमाम कर देंगे। हुकम की इजाजत और आशिष चाहिए। गुपचुप यह तय किया कि थाने के सिपाहियों में से एक-एक सिपाही को एक-एक मेनारिया परिवार अपने घर दावत पर न्यौतेगा। सिपाही लोग भोजन का निमंत्रण खुशी-खुशी स्वीकार कर लेंगे तब एक ही समय सबको ढोल के डाके के साथ जीमने के लिए पत्तल पर भोजन परोसा जाएगा और तीसरे डाके पर तलवार से उनका सिर काट कर वहीं अपने-अपने घरों में दफना दिया जायगा। वह दिन चैत्रवदी बीज, जमराबीज का दिन था।

मेणार (मेनार) उदयपुर से 35 किलोमीटर दूर चित्तौड़गढ़ नेशनल हाई-वे पर बसा पुराना गांव है। अतीत में इसका इतिहास सर आंखों पर लिये था तो वर्तमान में यह तलवारों की गैर खेलने वाले रणबांकुरों के कारण प्रसिद्ध है और आज तो पक्षी-प्रवासियों की दृष्टि से विश्व ख्याति लिए है।

मैं तलवारों की गैर के अध्ययन के लिए अपने बचपन के मित्र चांदमल दक के साथ 15 अगस्त 1976 को मेणार पहुंचा और वहां के परभूबा मेणारिया (80) तथा सरपंच भैरूलालजी मेणारिया (72) से भेंट की। भेंट के दौरान उन्होंने बताया कि इस गांव में सर्वाधिक रूप में मेणारियों की ही बसावट है। मंगल मेनारिया यहीं के थे जो महाराणा मोकल के समय चित्तौड़ रहे। ये जितने बलशाली थे उतने ही मंत्रसिद्ध थे। उन्होंने एकबार चतुर्दशी को पूर्णिमा कह दिया। दरबारियों ने उनकी गलती पकड़ ली और दरबार के सामने हाजिर किया। तब वेद-मंत्रों के बल कांसी की थाली चन्द्रमा के आगे कर सिद्ध कर दिया कि पूर्णिमा है।

बात महाराणा अमरसिंह के समय की है। मेवाड़ में कुल 52 थाने थे। सबसे जबरा ऊंठाला का था जो वर्तमान में वल्लभनगर के नाम से जाना जाता है। एकबार दरबार ने अपने पुरोहित को हुकम दिया कि मुगलों के आधिपत्य से ठिकानों पर आये दिन हमलों से बचने के लिए एक लाख रूपया ब्राह्मणों से, एक लाख चारण-भाटों से तथा एक लाख सौलह-बत्तीसां ठिकानेदारों से एकत्रित कर लिये जाय ताकि दुश्मनों से कड़ा मुकाबला कर सदैव के लिए उन्हें सबक दिया जा सके, न रहे बांस न बजे बांसुरी।

पुरोहित ने सम्पर्क किया तो उसे कोई माकूल जवाब नहीं मिला। सलूम्बर वालों ने कहा, 'फाल्गुन में नहीं, वैसाख में मुगलों से डटकर मुकाबला करने को सामूहिक निर्णय लेंगे।' भीण्डर के बलूसिंह ने कहा, 'इस मुकाबले में हरियावल अर्थात् सबसे आगे रह नेतृत्व करने का दायित्व मुझे दिया जाय तो मैं मुगलों का सफाया करने को तैयार हूं।' ब्राह्मण बोले, 'हाथ कंगन को आरसी क्या, कल सुबै ही हम अपना दमखम दिखा देंगे।'

पुरोहित की पत्नी ने सुझाव दिया कि उसके पास सवा लाख का हार है सो मौका पड़ने पर उसको उपयोग में लिया जा सकता है। सबसे बड़ा ठिकाना होने पर ऊंठाले के पास बीस हाथ गहरी, दस हाथ चौड़ी खाई खोद पानी से भरी गई। बलूसिंह मुख्य दरवाजे के किंवाड़ के लगे बड़े-बड़े तीखे भालेनुमा कीलों के आगे खड़ा हो बोला, 'हाथी से मेरा शरीर कीलों से छिदवा देना।'

मारकाट शुरू हुई। ऊंठाला का थाणा कट गया फिर मेणार का नम्बर आया। वहां के मेनारिया ब्राह्मणों ने कहा, 'यह काम अन्यों के सहयोग के बिना हम मिलकर अकेले ही कर लेंगे।' मेणार के सभी वीरबांके राजदरबार में पहुंचे और अर्ज किया कि हम सब अकेले एक-एक सिपाही का योजनाबद्ध तरीके से काम तमाम कर देंगे। हुकम की इजाजत और आशिष चाहिए।

महाराणा ने उनकी बात ध्यान से सुनी तथा इसके लिए जमराबीज, चैत्रवदी द्वितीया का दिन रखा गया। इस दिन एक-एक सिपाही को जीमने का निमंत्रण दिया गया। सब लोग खुशी-खुशी मेणार पहुंचे किन्तु बिना कोई भनक दिये, सुव्यवस्थित योजनाबद्ध मेणारिया वीरों ने सबको तलवार के घाट उतार समाधिस्थ कर दिया।

फोटो : रेन पालीवाल

इस ऐतिहासिक अभूतपूर्व घटना की याद में ही तब से प्रतिवर्ष जमराबीज को तलवारों द्वारा सभी गैर समारोह का आयोजन करते आ रहे हैं। इसे देखने आसपास तथा दूर-सुदूर के लोग बड़ी संख्या में वहां उपस्थित होते हैं।

फोटो : रेन पालीवाल

हमने यह उचित समझा कि यह समारोह देखने के लिए एक दिन अलग से आकर ही इसका जायजा लिया जाना ही ठीक रहेगा फलस्वरूप 1984 को जमराबीज को हम दिन को चार बजे ही मेणार पहुंच गये। चांदमल चूंकि वहां अध्यापक रह चुके थे इसलिए पूरा गांव उनसे भलीभांति परिचित था। इससे मुझे समारोह सम्बन्धी जानकारी लेने और फिर समारोह देखने में सभी ने हर तरह का सहयोग किया।

अगले वर्ष यानी 10 मार्च 1985 के धर्मयुग के होली विशेषांक में मेरा यह लेख 'तलवारों की गैर' शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिससे पहलीबार मेणार गांव की इस अति विशिष्ट गैर से व्यापक स्तर पर पाठकों को जानकारी उपलब्ध हो सकी।

मेणार का प्राचीन नाम मनिहार :

मेनार के बुजुर्गों के अनुसार इस गांव का प्राचीन नाम मनिहार था। यह सतयुग का गांव है जिसमें प्राय: मेनारिया लोगों की ही बस्ती है। यहां लगभग 50 घर मेनारिया ब्राह्मणों के हैं। ये लोग अपने को श्री गौड़ उदम्बर ब्राह्मण कहते हैं और गौत्र भारद्वाज बतलाते हैं। मेनारियों के अलावा खारोल, वागरिये, कुम्हार, तेली, महाजन और ढोली आदि के छुटपुट घर हैं। यहां कोई राजपूत, मुसलमान नहीं है। सभी मेनारियों के पास जागीरी हिस्सा है। अच्छी जमीन और रहने को बड़ी-बड़ी पोलें। गांव का पूरा नख-शिख स्वयं बोल रहा है कि यह गांव बड़ा प्राचीन और अपनी परम्पराओं से पल्लवित पोषित है। आधुनिकता का रंग कहीं प्राचीनता को लील नहीं पाया है।

मेनार में यह गैर वहां के प्रसिद्ध ऊंकारेश्वर चौरा (चौराहा) पर होती है। इसे 'ऊंकार महाराज का चौरा' भी कहते हैं। इस चौरे पर बहुत बड़ा ऊंचा चबूतरा है। यहां से पूरे गांव में पांच रास्ते जाते हैं। कहते हैं कि परखाजी को यह गांव माफी में मिला था। उनके पांच लड़के थे- पूना, ठाकरी, सोमा, लूणा और बीका। कभी इन पांचों की, चौरे के पांचों रास्तों से जाने पर पांच पोलें रहने की थीं। इन पांच परिवारों से होते-होते आज पांच सौ घर बन गये। तब 52 बीघा जमीन थी।

यह चौरा बड़ा पवित्र माना जाता है। यहां तक कि कोई भी इस पर जूते पहन नहीं चढ़ सकता। गांव की कोई औरत यहां से खुले मुंह नहीं निकलती। बड़ा अदब है इस चौरे का। यहां गैर के दिन सुबह से ही अलग-अलग जाति के लोग अपना बंधाबंधाया परम्परागत कार्य अपने जिम्मे का खुशी-खुशी पूरा करते हैं।

गैर के दिन सहयोग :

सर्वप्रथम खारोल लोग (8 घर) आसपास की जमीन पर जितने भी खड्डे-खोचरे होंगे उन्हें बूरकर समतल कर देंगे। फिर वागरिये (10 घर) पूरी जमीन की सफाई करेंगे। इनकी सफाई के बाद संध्या होते-होते कुम्हार (15 घर) अपने गधों पर पानी की लगड़ें भर कर सबओर पानी का छिड़काव करेंगे। यह सब पूरा होने पर रात को मशालों के लिए नाई (7 घर) अपनी-अपनी मशालें तैयार करेंगे। इन मशालों के लिए तेल की व्यवस्था तेली (10 घर) अपनी ओर से करेंगे। महाजन लोग गुलाल छांटकर अंतिम विदाई देते हैं। ढोल बजाने का काम ढोली (1 घर) करता है। पूरे समय तक दो ढोल बजते रहते हैं। पहले के ढोल तो बहुत बड़े हुआ करते थे जिनकी आवाज ही, कहते हैं, बारह-बारह कोस तक सुनाई देती थी।

यहां के वयोवृद्ध घासीलाल भानावत (85 वर्ष) से मेरी भेंट हुई जो अपनी पोल के नुक्कड़ पर ही खाट पर बैठकर बच्चों के पगड़ी बांधने का काम कर रहे थे। उनकी भानावत खांप सुनकर मुझे यह सुखकर ही लगा कि भानावत हम महाजनों में ही नहीं, ब्राह्मणों में भी होते हैं। घासीबा ने अपने सामने बैठे लड़के के पगड़ी का आंटा देते हुए कहा कि अब ग्यारह बरस से ऊपर की उम्र के सभी बच्चों के लिए सिर पर साफा, पगड़ी अथवा मोठड़ा अनिवार्य कर दिया है ताकि हमारी गैर की शान बदस्तूर अपने पुरखों जैसी बनी रहे। सभी के लिए चूड़ीदार पाजामा, लम्बी अंगरखी, कमरबंधा और साफा पगड़ी पर डंके की पछेवड़ी होना भी जरूरी कर दी है। ऐसा नहीं होने पर एक सौ एक रूपया जुर्माना तक हमने रखा है।

मेनार की इस गैर के सम्बन्ध में घासीबा ने बताया कि इस गैर का बड़ा ठोस इतिहास है। मेवाड़ में तब 52 थाने थे जो मुगलों के अधीन थे। इन थानों से मुगलों के आधिपत्य को हटाना था पर इसकी जिम्मेदारी कौन ले। कहते हैं, सबसे बड़ा थाना ऊंठाला (वर्तमान वल्लभनगर) का था जहां चूण्डावत जैतसिंह ने अपना सिर किले में पहले पहुंचाकर हरावल (सबसे आगे) में रहने का अधिकार पाया। दूसरा थाना मेनार का था जहां मेनारियों ने अपने पराक्रम और बुद्धि-कौशल से मुगलों का नाश कर दिया।

हुआ यह कि सबने संगठित हो गुपचुप यह तय किया कि थाने के सिपाहियों में से एक-एक सिपाही को एक-एक मेनारिया परिवार अपने घर दावत पर न्यौतेगा। सिपाही लोग भोजन का निमंत्रण खुशी-खुशी स्वीकार कर लेंगे तब एक ही समय सबको ढोल के डाके के साथ जीमने के लिए पत्तल पर भोजन परोसा जाएगा और तीसरे डाके पर तलवार से उनका सिर काट कर वहीं अपने-अपने घरों में दफना दिया जायगा। यही हुआ।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 मार्च 2022

सम्पादकीय

पर्वोत्सवों का मानवीकरण

पुरुष और प्रकृति का सम्बन्ध अकाट्य है। जो पुरुष अधिकाधिक प्रकृतिवादी होगा वह सदैव स्वस्थ और सानन्द जीवन जियेगा। प्रकृति पुरुष की प्राणवायु है। जीवनदायिनी शक्ति है। इसी कारण हमने जो हमारे लिये अत्यन्त जरूरी है उन तत्वों को देवता के रूप में प्रतिष्ठित कर उन्हें नमन करना शुरू कर दिया। वे हमारे सम्मुख प्रत्यक्ष नहीं हो सके इस हेतु हमने उनका मानवीकरण कर दिया।

उनका सान्निध्य प्राप्त करने के लिए हमने अनेक गीतों में उनका गुणानुवाद प्रारम्भ कर दिया। समूहबद्ध नृत्यों में उन्हें सम्मिलित कर दिया। अनेक खेल तमाशों में उन्हें अवतरित कर रात-रात भर उनकी प्रस्तुतियां शुरू कर दीं। उनके स्वांगों में उनका स्वरूप उतारना प्रारम्भ कर दिया और उनकी जीवन लीलाओं को मर्यादा के साथ प्रदर्शित कर उनके प्रति अगाध आस्था, श्रद्धा व्यक्त की।

विचार करें तो पता लगेगा कि मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक के सारे संस्कार और सरोकार देवात्मा-दिव्यात्माओं के बिना पूरे नहीं होते। उनकी अलौकिक छवि को दिव्यमान करते अनेक कथाओं का प्रणयन किया और उनके साथ व्रत तथा अनुष्ठान जोड़े ताकि मनुष्य अपने को असहाय और अकेला नहीं समझे। हर समय कोई-न-कोई अलौकिक शक्ति उनके साथ बनी रह उनकी रक्षा कर रही है। ऐसे करते विविध त्यौहार और उत्सव चले और जनमानस ने उनसे जुड़कर उन्हें स्थायीत्व प्रदान किया।

इस दृष्टि से होली को ही लें। देश के विभिन्न प्रान्तों में होली सम्बन्धी मान्यता के जुदा-जुदा मिथक मिलते हैं। होली का रूप-शृंगार भी भिन्न-भिन्न मिलेगा। उसके साथ धीरे-धीरे जो राग-रंग जुड़े वे भी आंचलिकता की छाप लिये मिलते हैं। अलग-अलग वर्ग, समाज ने उसे अधिकाधिक रंगदार बनाने के लिए पहचान के बतौर सबसे भिन्न बनाया। उदाहरण के लिये रामलीला में रामजीवन के प्रसंगों का मंचन लें।

राजस्थान में बिसाऊ की रामलीला बालकों द्वारा अभिनीत होती है। इसमें पात्र मुंह पर मुखौटा धारण करते हैं और मूक ही बने रहकर प्रस्तुति देते हैं। कोटा के पाटूंदा में रामलीला हाड़ौती में अभिनीत होती है। भरतपुर में विभिन्न स्थलों पर प्रसंगानुसार मंचन होता है। पूरा शहर ही अयोध्या का प्रतीक बन जाता है।

राजस्थान में होली के भी अनेक रूप हैं। मेवाड़ में बालिकाओं की होली का रूप उनकी सहेली का है। हर घर की बालिका उसके लिए गोबर के विभिन्न आभूषण बनाती है। संध्या को होलीस्थल पर एकत्र हो गीत गाती हैं। भाई बड़कुल्लों की माला पहनाकर होली की साजसज्जा करता है। आपस में प्रसाद के रूप में चना, मूंफली, फूली,गुड़धानी, मिष्ठान्न बांटती हैं।

होली की सभी विज्ञापनदाताओं, लेखकों, पाठकों तथा सुधिजनों को हार्दिक बधाई।

तुर्रा-कलंगी प्रशिक्षण शिविर

चित्तौड़गढ़ में जवाहर कला केंद्र (जयपुर) के सौजन्य से जिला लोक कलाकार संस्थान (चित्तौड़गढ़) के तत्वावधान में पन्द्रह दिवसीय तुर्रा-कलंगी प्रशिक्षण शिविर उस्ताद अकबरबेग कागजी तथा लोक कलाकार लक्ष्मीनारायण रावल के मार्गदर्शन में संचालित हुआ। शिविर संरक्षक अखिलेश श्रीवास्तव के अनुसार 25 जनवरी से 11 फरवरी तक इसका आयोजन हुआ।

शिविर में चित्तौड़गढ़, चंदेरिया, घोसुण्डा, सतपुड़ा, सावा, बस्सी, बड़ोदिया, कनेरा, बड़ीसादड़ी, बेगूं, रावतभाटा, प्रतापगढ़, रतलाम आदि स्थानों के लगभग 30 कलाकारों ने भाग लेते लोकनाट्यकला की विभिन्न राग-रागनियों का अभ्यास किया। प्रशिक्षण काल में जिला प्रशासन, नगर परिषद के अधिकारी, साहित्यकार अब्दुल जब्बार, शिव 'मृदुल' तथा नंदकिशोर 'निर्झर' ने उचित मार्गदर्शन किया।

शिविर का समापन 11 फरवरी को नगर परिषद अध्यक्ष संदीप शर्मा के मुख्य आतिथ्य में 'राजकुमारी फुलवंती' ख्याल की प्रशंसनीय प्रस्तुति के साथ हुआ। उस्ताद अकबरबेग कागजी ने 400 वर्ष पुरानी तुर्रा-कलंगी ख्याल विधा के विलुप्त होने पर चिंता प्रकट की। शिव 'मृदुल' तथा नंदकिशोर 'निर्झर' ने इस कला के संरक्षण हेतु कलाकारों को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि शर्मा ने नगर परिषद की ओर से संरक्षण हेतु यथासंभव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

- शिव 'मृदुल'

होली पामणी रे लाल

राजस्थान रंग-रूपों की दृष्टि से अत्यन्त रंगीन प्रदेश कहा गया है। यहां के त्यौहारों एवं उत्सवों में जितनी कलात्मकता, रंग-रूपता एवं संजीदगी देखने को मिलती है, उतनी अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है।

होली के आभूषण :

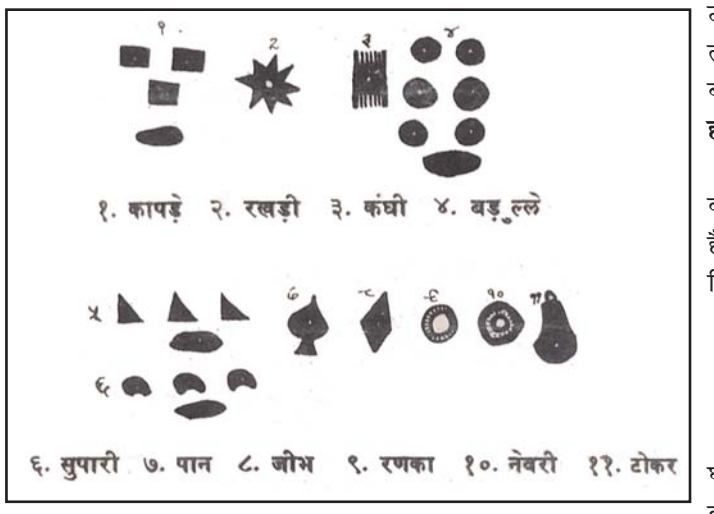

फाल्गुन शुक्ला एकादशी से ही बालिकाएं होली माता के लिए गोबर के नाना आभूषण एवं बडुल्ले (बड़कुल्ले) बनाना प्रारम्भ कर देती हैं। इन बडुल्लों में सौलह छोटे-छोटे गोल बडुल्लों के अलावा बोर, चूड़ी, रखड़ी, नेवरियां, रणके, तमण्या, हथपान, पांच तिकोने सिंघाड़े, पांच कापड़े, पांच सुपारी, कंघी, जीभ आदि होते हैं। एक नारियल भी बनाया जाता है। इन सभी में छोटे-छोटे छेद बनाकर मालाएं बना ली जाती हैं जो होली को पहना दी जाती हैं। इस दिन बालिकाएं होथी थड़े (होली के स्थान पर) एकत्रित हो होली की चुंगी के रूप में अपने-अपने घरों से लाई ज्वार की फुली, चने तथा सेव आदि आपस में बांट-खाकर होली के नाना प्रकार के गीत गाकर स्वस्थ मनोरंजन करती हैं।

ऊबी रीझे होली थारे रखड़ी घड़ाई दूं
डाबा में मत मेल होली
फागण रा दिन च्यार होली
वेगी आवजे।

ई कुण खेड़ादार
होली पामणी रे लाल।
ई कुण बडुल्या बरावे
होली पामणी रे लाल.....

बालक भी होली जलाने के लिए अपनी-अपनी टोलियां बनाकर हर घर से उपले, लकड़ियां तथा घासफूस आदि लाकर होली के आसपास बहुत सारा ढेर लगा देते हैं।

होली के माण्डनें :

फाल्गुन मास में औरतें विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करती हैं। इनमें फागणिया प्रमुख है। होली पर फागणिया मंगवाने की बात कितनी सुहावनी लगती है-

फागण आयो रसिया फागणियो रंगाई दो
पीलिया में मच रही होली, रम रही होली
होली आई रे.....

इस दिन घर-आंगन लींप-पोतकर नाना-प्रकार के माण्डने माण्डे जाते हैं। इन माण्डनों में चौक, चंग, कमल का फूल मुख्य हैं। ये नाना चिड़कलियों, घेवरों, जलेबियों, मुरकियों तथा बेलबूंटों से सजा दिये जाते हैं।

बाल ढूंढ़ :

होली के दूसरे दिन प्रथम होली पर नवजात बच्चों को राख का तिलक लगाकर होली की सात परिक्रमाएं दिलाई जाती हैं जिसे ढूंढ़ाना अथवा उनकी शादी कराना कहते हैं। ढूंढ़ाने वाले अपने साथ नारियल आदि लाते हैं जिसे वहां बैठे गैर खेलने वाले गैर्ये खाते हैं और इस प्रतीक्षा में रहते हैं कि होली जल्दी से जल्दी आये ताकि ढूंढ़ाने वालों से गैर्यों को खूब भूजिये-पापड़ी खाने को मिले।

- डॉ. तुक्तक भानावत

हर बारह में से एक व्यक्ति को किडनी की समस्या

उदयपुर (ह.सं.)। राजस्थान में किडनी की बीमारियों के अध्ययन हेतु उदयपुर में पारस जेके हॉस्पिटल के डॉ. आशुतोष सोनी ने बीकानेर, जोधपुर, कोटा एवं उदयपुर के अस्पतालों के डाटा का विश्लेषण किया जिसमें पता चला कि राजस्थान में हर बारह व्यक्ति में से एक को किडनी की किसी ना किसी समस्या से सामना करना होता है।

डॉ. आशुतोष सोनी ने बताया कि किडनी में बने स्टोन जब पेशाब के रास्ते को रोक देते हैं तो उसके बढ़े हुए दबाव से किडनी में स्थायी परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। सुखी जलवायु के लोगों को दिन में तीन से चार लीटर पानी की प्रतिदिन आवश्यकता होती है जिससे वे अपनी किडनी की स्वास्थ्य को सामान्य बनाएं रख सकें। राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में किडनी बीमारी का प्रमुख कारण दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तरह अब भी डायबिटीज है। क्रोनिक किडनी बीमारी के लगभग आधे मरीज वे हैं जिनमें लंबी अवधि के शुगर की बीमारी का प्रभाव किडनी पर आ जाता है। डायबिटीज खून में शुगर का बढ़ना मात्र नहीं है बल्कि इस बढ़ी हुई शुगर का असर शरीर के हर सिस्टम पर पड़ता है जिसमें तंत्रिकाएं, आंखें, किडनी एवं हृदय के सिस्टम प्रमुख हैं।

पोथीखाना

माटी की महक देतीं लघुकथाएँ

- त्रिलोकीमोहन पुरोहित -

माधव नागदा की लघुकथाएं अपनी केंद्रिकता, सुगठित बुनावट एवं स्थानीयता के कारण पाठकों को न केवल बांधे रखती हैं बल्कि अपनी अंतर्वस्तु और ट्रीटमेंट के चलते उन्हें प्रभावित भी करती हैं।

'माटी की महक' कृति भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अनुभूतियों को लेकर लिखी गई हैं। कथानक के आधार पर इन्हें तीन श्रेणियों में लिया जा सकता है।

प्रथम प्रकार की लघुकथाओं में हमारी पारिवारिक व्यवस्थाओं पर विचार करने की आवश्यकता पर संकेत किया गया है। इसमें 'परिवार की लाड़ली', 'अपना-अपना आकाश','अग्निपरीक्षा', 'माँ नहीं पूछती है कि .....', 'दादी, कहानी सुनाओ ना', 'डेड', 'पुराना दरवाजा', 'रईस आदमी', 'पीहर' को सम्मिलित किया जा सकता है।

दूसरे प्रकार की वे कथाएँ हैं जिनमें आक्रोश है। कुछ बदलने की जिद है। सही को सही कहने की ही नहीं अपितु, सही को पूरी तरह से स्थापित करने का आग्रह है। 'शहर में रामलीला', 'बुढ़ापा', 'माँ बनाम माँ', 'मीठा बोलो', 'परिचय', 'पुनर्मूषको भवः', 'हम हैं न', 'बातचीत', 'अगले जनम में' , 'ख्वाहिश', एवं 'लड़की' इसी प्रकार की कथाएँ हैं।

तीसरे प्रकार की रचनाएँ वे हैं, जिनमें समाज में व्याप्त अव्यवस्थाएं, भ्रष्टाचार, सामन्तवादी सोच, भटकते एवं छूटते हुए सरोकारों, भौतिक ऐश्वर्य की अभिलिप्सा, संवेदनहीनता, अस्तित्व का भय और तलाश पर सधा हुआ व्यंग्य किया है। 'वह चली क्यों गई', 'माजना', 'जीवोजीवस्य भोजनम्', 'जली हुई रस्सी', 'पुरानी फाइल', 'प्रेरणा', 'इस मोड़ पर', 'फैसला', 'नाटक', 'कॉम्प्लेक्स', 'कर्मयोगी', 'किरच-किरच सपने', 'प्रतीक चिह्न', 'अब भुगतो' जैसी कथाओं को इस श्रेणी में रखा जा सकता है।

कृति में कथाकार ने परिवेश का पूर्ण ईमानदारी से चित्रण किया है। कथाएँ मेवाड़-अंचल का प्रतिनिधित्व करती सम्पूर्ण ग्रामीण अंचल और कस्बाई जीवन को अपने में समाविष्ट किये अमानवीय वृत्तियों के साथ व्यवस्थागत विद्रूपताओं का सटीक आकलन करती हैं।

गाल गुलाल लगायें कैसे, किस विध, किसके संग?

होली पर किसको करें, याद लगायें रंग?
गाल गुलाल लगायें कैसे, किस विध, किसके संग?।।
मौज मिजाज हवा की नांई, फुरकत अंग-प्रत्यंग।
नैन बावरे बाण चलत है, बाजत मृदंग-स-चंग।।
हमारी भी हो जाय और हो जाय तुम्हारी भी होली।
दोनों के सगुन बहुत अच्छे, दड़के चड़के दामन चोली।।
आधा अंग राधा देती है, आधा अंग बांसुरी का ले लो।
गुल्ली डंडे की खब्बी में, आओ गुल्लीडंडे खेलो।।

डॉ. कैलाश 'मानव' :
नारायण की सेवा के संकल्प,
सदा कैलाशी हों।
मानव-मन के ललिता, प्रशांत,
वंदना पूर्ण विश्वासी हों।।
दिव्यांग श्रेष्ठ नररत्न,
सभी में श्रद्धा के शुभ भाव जगे।
समदर्शी मैत्री भावना हो,
दुख दोरम के दुर्दिन भगे।।
सेवा के संबल की जय हो।
निर्भय जीवन सुखदा वय हो।।

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' :
प्रथम गुरु पीएच.डी. नमन करूं नित याद।
प्रथम मुझे डिग्री मिली, देते आशीर्वाद।।
देते आशीर्वाद तिराणु वर्षीय साधक।
सभी विधाओं में लिखते सुरसत आराधक।।
जीवन भर 'संघर्षों के गुलाब' में पलते।
दिव्य जोत से हम सब जगमग झिलमिल जलते।।

नंद चतुर्वेदी :
नंद! तुम्हारी सहज याद में रोते नहीं बिलखते हैं।
हंसी, ठहाके, तेरी मेरी, करते और महकते हैं।।
किन्तु नहीं वह रंग और रंगत संगत सब गोल हुई।
वे सब किस्से और बतरसें बातें सब बेडोल हुई।

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर :
खुद ही पढ़ो, लिखो खुद ही,
और खुद ही करो प्रशंसा।
किसको क्या लेना देना है, किसकी जानो मंशा।।
सस्ता खस्ता सब लिखते हैं, सबका रखते मान।
मुर्दा तो मुर्दा ही होगा, जाये कब्र मसान।।
बोलते सबकी जय
कोई कुछ भी कहें किन्तु साहित्य के सिरमौर हैं।
उनके जैसा सच्चा लेखक ढूंढ़ो तो नहीं और है।।

डॉ. भगवतीलाल व्यास :
शहर स्मार्ट हो गया अचानक, हम ही हैं ठंडे बस्ते में।
कविता कथा व्यंग्य कछुए पर लदे रेंगते हैं सस्ते में।।
भटक रहा हूं, भूल गया वह चाल और चंचल छाया।
माया का मोह ममत्व गया, बेकाबू डोल रहा भाया।।

क़मर मेवाड़ी :
लाखों में एक अमरधर्मी होते, जो करते बड़ा काम।
जो अनाम से उठकर के, बमुश्किल करते बड़ा नाम।।
अपनी, अपने गांव और संबोधन की पहचान बनाई।
सृजन विधा विविधा से जुड़कर
जमकर अपनी धाक जमाई।।
ऐसे अधिक नहीं होते हैं, यारबाज खुशहाल मसखरे।
जो भी मिलता, पंकज खिलता, अपने मन की मौज धरे।।

प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत :
कोई होता रंग कभी, बेरंग नहीं होता।
भूले भटके दांव, खिलाड़ी भी नहीं खोता।।
गला फूलाकर कबूतर चाहे, कितना ढोल बजाये।
कितने ही घुमड़े बादल, गरजे, पानी बरसाये।।
बंद नहीं बंदे की मुट्ठी, आकर कोई खोले।
विद्या-विनय-ज्ञान-गंगा के, बाट तराजू तोले।।
जनार्दन की जय है पहचान।
शिला पर जनतंत्रीय निशान।।

किशन दाधीच :
यह नगरी बेढ़ब लगती है, उड़ चल गधे हंस की चाल।
गीत समय उल्टे लटके हैं, देख रहे बूंदी के भाल।।
किन्तु उदयपुर नहीं छूटता।
गीत खजाना नहीं खूटता।।

डॉ. महेन्द्र भानावत :
बिन धूणी का चमचा खरा मसखरा है।
परत-परत पर लोक, खजाना हराभरा है।।
यहां लोक की रश्मि और रेशम तुलता है।
भस्म नहीं, भस्मी से सबकुछ ही खुलता है।।
देवता की मेहर है।
वही सबका हर-हर है।।

डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ :
संवेदन की शिलपट्टी पर,
रगड़-रगड़ अक्षर पग धोते।
किसकी शरण चरण अब जावें,
डबडब आंखें कुर-कुर रोते।।
कबूतर की पांखों से फड़फड़,
टूटन मगरी लगते मीत।
व्हील चेयर पर प्रीत लटकती,
अंगीठी पर तपती शीत।।
रितु बसंत में पात ज्यों, अब न रही वह बात।
भरी दुपहरी भी गई, दिवा सपन सी रात।।
बालम नहीं रहे।

डॉ. देव कोठारी :
सबको लगते देव से, बड़ी ही मीठी पाती।
सबकी लेते खोज, भूमिका महक बढ़ाती।।
सबकी सुध लेते, धन्य हो जाते।
सभी सरोकारों में जीते, जो लिख पाते।।
आप धन्य हैं।
सभी अपन, कोई न अन्य हैं।।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' :
पुरस्कार सम्मान से बनती रहती पैठ।
रचनाधर्मी दायरे कई खोलते गेट।।
कई खोलते गेट शुरू हो कानाफूंसी।
अपने ही ईर्ष्यावश मिलते माणक मुंशी।
सच है जब जुगनू बन जात सूरज गोला।
कइयों का तब उतर जाता है असली चोला।।

राजकुमार जैन 'राजन' :
राजकुमार राजन बने बढ़ा रहे यश-व्यास।
कई दूत मरदूत हो काट रहे हैं घास।।
काट रहे हैं घास ताश के पत्ते नांई।
पूंछ हिलाते रह गये, सुरसत के सांई।।
बीमा और साहित्य बिठाया मेल अनोखा।
तोल भाव की समझ परखलो कोई न धोखा।।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना :
नारायण का पारायण करते युग बीते।
भरे हजारों बार किन्तु रीते ही रीते।।
व्यंग्यकार सब बिना, वसीयत गोल होगये।
कैसे थे वे मित्र, यूं ही बेबोल सोगये।।
जग उड़न खटोला है।
सब पोलमपोला है।।

शैलेष व्यास :
खुद का ही अखबार, क्यों नहीं खुद ही बांचें?
पारदर्शिता खुद ही क्यों नहीं खुद की जांचें?
यहां ठहाके विजीत भाग्य कैसे फलते हैं?
अपने-अपने भाग्य सभी में ही पलते हैं।।
सोचकर जरा बताओ।
पहेली नहीं बुझाओ।।

डॉ. शकुंतला पंवार :
बोरे में सब बंद लिफाफे झांक रहे हैं।
आक धतूरे चिलम तमाखू फांक रहे हैं।।
कण्व ऋषि के आश्रम सी छरहरी हिरणिया।
शाकुन्तलम चलाती उषा प्रथम किरणिया।।
ऋषि बिन भोली हिरणी सी करती भगती है।।
नृत्य सिखाती और ठहाकों की सगती है।।

डॉ. तुक्तक भानावत :
मित्र लोग तुकसा कहते हैं
किन्तु नहीं मालूम तुक क्या है?
आईना नहीं जानता स्वयं
पूछो उससे खुद का लुक क्या है?

हमतो हम ही हैं दूजा नहीं।
कोई तुलना होगी न कहीं।।
मैत्री अनमोल परस्पर है।
हर दिल अजीज अपना घर है।।

डॉ. इकबाल सागर :
ऐसी टपकती शायरी, टोंटी टपकती है।
जैसे किसी विध वृच्छ से वेलि लपकती है।।
जमाने की जलेबीदार सुनलो दासतां यारों!
मजे में मौज ऐसी भी कहां होगी खबरदारों।।
राम रसखान कहाते।
मान वृन्दावन-सा पाते।।

वेद व्यास :
अब तक तो समझो मुट्ठी में समय कैद था।
भावताव जोरों पर कोई नहीं भेद था।।
अखबारों का अश्क देख कॉलम राइटिंग बंद हुई।
साहित्य साथियों खूंटी पर मारामारी भी मंद हुई।।
समय की शिला खिसकती है।
हार में जीत दिखती है।।

श्रीकृष्ण शर्मा :
जिंदों का तो करते ही हैं, अभिनंदन वंदन सत्कार।
धन्य भाग जो मुर्दों की भी,
स्मृति का करते हैं उद्धार।।
जिसने भी जो जनम लिया है, वो धरती की शोभा है।
चौरासी लख जीवों में, सब श्रेष्ठ न कोई डोबा है।।
हो कलालोक के धुरंधर।
तुमसा नहीं देखा है श्रीवर।।

डॉ. दिलीप धींग :
धर्म आतमा का गुण बोधन, धारण करने का सुख है।
नहीं थोपने, अपनी ढपली, राग बजाने का लुक है।।
विनीत सरल सहज होने का, स्वांग नरक का गामी है।
अपने ही घर, गांव, गली में, कुचर्चा बदनामी है।।
नर का भूषण रूप, रूप का ज्ञान, और गुण क्षमा कहा।
बुद्धि विवेक बल समय सभी के,
संबल हो सरताज महा।।

इकराम राजस्थानी :
वो रसखान थे कृष्ण उपासक
ये इकराम हैं राम हि रामा।
ब्रज के कण-कण मां बसैरों करें
राजसथानी रटैं सुबै सामा।।
हाथी के दांत जु भेद करे पर
एक ही घट एक ही रसखाना।
भेद करे वो भगत नहि मानू मैं
काल रो भेद सबै सच माना।।

सम्मानप्रदाताओं के नाम :
अपने ही आयोजन में हो अपना ही गुणगान।
अपने ही स्वागत में जैसे अपना ही जलपान।।
पुरस्कार में भी ऐसे ही भेंट लिफाफा करते।
वही लिफाफा आयोजकजी अपनी अंटी धरते।।
यही शुद्ध व्यवसाय बचा है बिना भेल के।
बाकी तो सब मस्का मालिश बिना तेल के।।

निठल्लों के नाम :
हींग लगे ना फटकरी यदि रंग चोखा आय।
तो किसका क्या जात है किसका कोई खाय।।
यदि मुफ्त में ही मिले करने को आनंद।
तो क्यों पैसा खर्च कर हम खायें गुलकंद।।
घर पर बैठे ऊंघते खाते करते मौज।
बैठ मंदिर की सीढ़ियां किसकी करते खोज?

अभागे भाग्यवानों के नाम :
भाग्यवान बननेवाले खुद ही बने अभागे।
जिनके पीछे भगी गोपियां वे गोपीचंद भागे।।
सृष्टि को सम्मोहन देती कहां बांसुरी बेसुर होगई।
बिन पानी के घाटों पर ही आंसू धोते रात सोगई।।
ढीली पकड़ रामजी बोले, सुनो श्यामजी मेरी बात।
गुल्ली छूटी गई हाथ से डंडा दिखे गुडिन्दे खात।।

- संप्रति के सौजन्य से
डॉ. तुक्तक भानावत, महासचिव

बाजार / समाचार

दीक्षित प्रदेश महामंत्री नियुक्त

उदयपुर (वि.)। विप्र सेना जोन ए 1 में प्रदेश अध्यक्ष दिनेश शर्मा के नेतृत्व में युवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष नरेशकुमार शर्मा, जिला प्रभारी राजेश भट्ट, जिलाध्यक्ष मोहन मेनारिया, इंदर मेनारिया अरविंद शर्मा, रोशन शर्मा आदि ने समाजसेवी गोविन्द दीक्षित से मुलाकात कर परशुराम जयंती पर शोभायात्रा व ब्राह्मण समाज को एकसूत्र एकमंच पर लाने के लिए रूपरेखा तैयार की। इस दौरान गोविंद दीक्षित को सर्वसम्मति से उपरणा ओढ़ाकर प्रदेश महामंत्री मनोनीत किया गया।

जिंक फुटबॉल अकादमी की टीम ने दिल जीता

उदयपुर (ह.सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी के युवा फुटबॉल खिलाड़ियों ने पंजाब में गत दिनों आयोजित 59वें अखिल भारतीय प्रधानाचार्य हरभजन सिंह मेमोरियल फुटबॉल टूर्नामेंट में शारीरिक रूप से अपने से कहीं अधिक मजबूत और अनुभव में अपने से आगे टीमों के खिलाफ साहसिक प्रदर्शन से सबका दिल जीत लिया।

वेदांता-हिंदुस्तान जिंक द्वारा राजस्थान के साथ-साथ देश में फुटबॉल क्रांति लाने के मकसद से शुरू की गई जिंक फुटबॉल अकादमी को रेंजर्स एफसी दिल्ली और सीआरपीएफ जालंधर के साथ ग्रुप-ए में शामिल किया गया था। उलटफेर करने का माद्दा रखे वाली जावर की टीम ने अपने ग्रुप के पहले मैच में रेंजर्स एफसी दिल्ली को 3-1 से हराने की दिशा में बेहतरीन प्रदर्शन किया। फॉरवर्ड आशीष मायला ने दूसरे हाफ में दो चौंकाने वाले गोल किए जबकि इससे पहले अमन खान ने पहले हाफ में बेहतरीन फिनिश के साथ बराबरी का गोल किया था। दूसरे मैच में जिंक फुटबॉल टीम ने सीआरपीएफ जालंधर के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ खेला और अंक हासिल किए। जावर के युवा लड़कों की टोली ने जंगमिनथांग हाओकिप और आशीष मायला के गोलों से दो बार लीड हासिल की गई लेकिन अंतत: एक मजबूत टीम के खिलाफ उसे रक्षात्मक होते हुए अंक बांटने पर मजबूर होना पड़ा। दो मैचों में चार अंकों के साथ जिंक फुटबॉल अकादमी की टीम हालांकि बेहतर गोल अंतर की बदौलत ग्रुप-ए में केवल दूसरा स्थान ही हासिल कर सकी।

स्लाइस का नया समर कैम्पेन लॉन्च

उदयपुर (वि.)। गर्मियों के सीजन को रोमांच से भरते हुए, स्लाइस ने अपना नया कैम्पेन जारी किया है जो ग्राहकों को स्लाइस के 'सबसे थिक सबसे टेस्टी' ड्रिंक होने की खूबियों से रूबरू कराएगा। अनुज गोयल, एसोसिएट डायरेक्टर, ट्रॉपिकाना एंड स्लाइस, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि भारत का सबसे ज्यादा गाढ़ा और सर्वाधिक स्वाद से भरपूर ड्रिंक के तौर पर, स्लाइस की यह नई मजेदार और रोचक फिल्म 'सबसे थिक सबसे टेस्टी' चैलेंज के साथ ग्राहकों को आंख बंद कर स्वाद की परख करने के मजेदार रास्ते पर लेकर जाती है। इस टीवीसी में सुपरस्टार और ब्रैंड एंबैसडर कैटरिना कैफ दिखायी दे रही हैं। गर्मियों की आमद के साथ ही हमारा मकसद इस नए मौसम में स्लाइस का नया कैम्पेन पेश करना रहा है।

शिवाज़ ने नये लुक से पर्दा उठाया

उदयपुर (वि.)। ब्लेंडेड स्कॉच व्हिस्की, शिवाज़ ने अपने फ्लैगशिप ब्लेंड के एक नए लुक से पर्दा उठाया है। यह शिवाज़ की डिजाइन में 112 साल के इतिहास में सबसे बड़ा बदलाव है। कार्तिक मोहिंद्रा, चीफ मार्केटिंग ऑफिसर, पेरनॉड रिकॉर्ड इंडिया ने कहा कि दुनिया की सबसे अधिक बिकने वाली स्कॉच व्हिस्की में से एक शिवाज़ 12 ने अपनी बोतल, लेबल, और पैक पूरी तरह से नया स्वरूप दिया है। शिवाज़ की लक्जरी और बेमिसाल विरासत की झलक पेश करता इसका यह नया आकर्षक लुक बोल्डनेस, मार्डर्निटी और स्टेटस का एक खास संगम है। इस नई डिजाइन में शिवाज़ 12 की आइकॉनिक बोतल को एक नया आकार दिया गया है।

ज़िंक के उपयोग पर प्रशिक्षण प्रोग्राम

उदयपुर (ह.सं.)। किसानों को खेती में ज़िंक के संतुलित इस्तेमाल के बारे में जागरुक बनाने के लिए हाल ही में इंटरनेशनल ज़िंक एसोसिएशन और हिंदुस्तान ज़िंक लि. ने महाराणा प्रताप युनिवर्सिटी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। इस समझौता ज्ञापन के तहत महाराणा प्रताप युनिवर्सिटी में पहले प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें मदार गांव के 30 किसानों ने हिस्सा लिया। सत्र में बड़ी संख्या में महिला किसान शामिल हुईं। सत्र के दौरान खेती में सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे ज़िंक के महत्व पर रोशनी डाली गई। सत्र में हिस्सा लेने वाले मुख्य उपस्थितगणों में डॉ. एस के शर्मा, डायरेक्टर रीसर्च, एमपीयूएटी, डॉ. सौमित्रा दास, डायरेक्टर, साउथ एशिया- ज़ैडएनआई, इंटरनेशनल ज़िंक एसोसिएशन, डॉ. रेखा व्यास, ज़ोनल डायरेक्टर रीसर्च, एमपीयूएटी, डॉ. अरविंद वर्मा, एसोसिएट डायरेटर रीसर्च, एमपीयूएटी, डॉ. देवेन्द्र जैन, असिस्टेन्ट प्रोफेसर तथा डॉ. गजानन्द जाट, असिस्टेन्ट प्रोफेसर और प्रोजेक्ट के प्रिंसिपल इन्वेस्टीगेटर शामिल थे। प्रवक्ताओं ने खाद्य श्रृंखला में ज़िंक के महत्व और मानव के स्वास्थ्य पर ज़िंक की भूमिका पर रोशनी डाली।

प्रतिवर्ष ही अनेक मधुर स्मृतियां छोड़ जाती हैं 'स्मृतियां'

उदयपुर (ह.सं.)। उदयपुर में जन्में प्रख्यात तबला वादक पं. चतुरलाल की स्मृति में पं. चतुरलाल मेमोरियल सोसायटी (नई दिल्ली) एवं वेदान्ता, हिन्दुस्तान जिंक लि. के संयुक्त तत्वावधान में 5 मार्च को शास्त्रीय संगीत संध्या 'स्मृतियां' का आयोजन किया गया। युवा कलाकार श्रुति और प्रांशु चतुरलाल के 'रेगिस्तान' थीम की संगति पर पं. रोनू मजूमदार की बांसुरी की धुनों एवं मालिनी अवस्थी के लोकगीतों से लेकसिटी की शाम सुरमयी हो गई।

शुरूआत में प्रांशु चतुरलाल एवं साथी कलाकारों ने लोक, शास्त्रीय और फ्युजन से राग, ताल और छंद के मनमोहक संगम से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। राग मांड और शास्वी में 'म्हारो बिछुड़ो नैणा रो लोभी', राग किरवानी में राजस्थानी लोकगीत 'आवे हिचकी' की पर्कशन के साथ सवाई खान के सूफी गायन, ढोलक पर लतीफ खान, सारंगी पर मुद्दिसर खान तथा कीबोर्ड पर सलीम बिलाड़ा की दिल लुभा देने वाली तालमेल ने श्रोताओं के मन को थिरका दिया।

राग देस में 'बालम जी म्हारा आप बसो परदेस' प्रस्तुति में तबला, ड्रम्स, दरबुका, खड़ताल सहित ढोलक और सारंगी से मुक्ताकाशी रंगमंच तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

प्रख्यात बांसुरीवादक पं. रोनू मजुमदार ने साढ़े सात मात्राक से बांसुरी के कंठ खोले तो उनका अनुभव मुखर हो उठा। पं. रोनू मजुमदार और लोकगायिका मालिनी अवस्थी की पहलीबार हुई जुगलबंदी ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रांशु चतुरलाल ने तबले पर संगत की। पं. मजुमदार ने बनारसी ठुमरी 'हमसें नजरिया काहे फैरी रे बालम' से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। जुगलबंदी में दादरा, झूला और होली, कजरी, चेती की प्रस्तुतियों में 'झूला धीरे से झुलाओ बनवारी अरे सांवरिया' की प्रस्तुति ने चिरस्मरणीय छाप छोड़ी।

प्रारंभ में हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा, आईजी हिंगलाजदान, जिंक के निदेशक अखिलेश जोशी एवं ई कनेक्ट के एमडी मनोज अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित किया। संचालन पं. चरनजीत की पुत्री श्रुतिलाल ने किया। कार्यक्रम के सह-प्रायोजक राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लि., पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन, नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन लि., पावरग्रिड कॉर्पोरेशन लि., भारतीय लोककला मंडल, होटल रमाडा एवं होटल प्राइड थे।

पं. चरनजीत ने बताया कि 'स्मृतियां' नाम से यह कार्यक्रम उदयपुर में प्रतिवर्ष आयोजित हो रहा है। इसके तहत अब तक पं. हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी), पं. शिवकुमार शर्मा (संतूर), पं. जसराज (गायन), उस्ताद अमजद अली खां (सरोज), उस्ताद जाकिर हुसैन (तबला), पं. राजन साजन मिश्रा (गायन), कद्री गोपालनाथ (सेक्सोफोन), पं. रोनू मजुमदार (बांसुरी), प्रांशु चतुरलाल (तबला), राहुल शर्मा (संतुर), गुन्देचा बन्धु (गायन), उस्ताद सुजात हुसैन खां (सितार), शूबेन्द्रो राय (सितार) श्रीमती शासकीया राव दी हास (चौलो), मालाश्री (गायन) जैसे सिद्ध प्रख्यात कलाकारों ने स्मरणीय प्रस्तुतियां दी हैं।

इंदिरा आईवीएफ ने आयोजित की पहली राष्ट्रीय 'रेप्रो क्विज'

- माधुरी प्रथम, डॉ. शिराली रूनवाल द्वितीय व देविकाराज तृतीय

उदयपुर (ह.सं.)। इंदिरा आईवीएफ ने पहली राष्ट्रीय प्रजनन चिकित्सा क्विज़ 'रेप्रो क्विज़' का आयोजन उदयपुर में इंटास फार्मा के सहयोग से किया। इस क्विज के तीन स्तरों में से अंतिम राउंड में ऑनसाइट क्विज आयोजित किया गया। देशभर के 28 राज्यों के लगभग 110 मेडिकल कॉलेजों से चुने गए 20 फाइनलिस्ट इसमें सहभागी हुए थे। मुख्य अतिथि मेवाड़ के पूर्व राजघराने के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ उपस्थित थे।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि इंदिरा आईवीएफ हजारों परिवारों को संतान सुख प्रदान कर पुण्य का काम कर रहा है। किसी के घर में एक जीव का जन्म होना और शिशु की किलकारी का आंगन में गूंजना लोगों को सुकून देता है। नि:संतान दंपती के जीवन में नई खुशियां भर देता है। मैं मुर्डिया परिवार को बधाई देता हूं कि इसके लिए उन्होंने मेवाड़ की पावन धरा को चुना। टूरिज्म कैपिटल के रूप में पहचान बनाने वाला उदयपुर अब मेडिकल हब के तौर पर भी देशभर में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। यह मेवाड़ के लिए खुशी की बात है।

टूरिज्म कैपिटल के रूप में पहचान बनाने वाला उदयपुर अब मेडिकल हब के तौर पर भी देशभर में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है, यह मेवाड़ के लिए खुशी की बात है।

प्रतियोगिता के शुरुआती दो राउंड पिछले साल क्रमश: राज्य और ज़ोनल स्तर पर ऑनलाइन मोड में आयोजित किए गए थे। आईवीएफ क्षेत्र में इस तरह की प्रतियोगिता पहली बार आयोजित की गयी। इसमें देशभर के 550 से अधिक छात्रों ने भाग लिया था। अंतिम राउंड में माधुरी कोन्डीसेट्टी प्रथम रही जिसे इंदिरा फर्टिलिटी अकादमी में चार महीने की फेलोशिप और 1,00,000 रुपये के गिफ्ट कूपन से सम्मानित किया गया। द्वितीय डॉ. शिराली रूनवाल तथा तृतीय देविका राज को फेलोशिप के साथ 75,000 तथा 50,000 रुपये के गिफ्ट कूपन प्रदान किए गए। इसके अलावा, राष्ट्रीय स्तर के सभी प्रतिभागियों को इंदिरा आईवीएफ अकादमी में चार महीने की फेलोशिप प्रदान की गयी है। इस अवसर पर संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट, सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी और आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल उपस्थित थे।

इस दौरान इस क्षेत्र में हो रही प्रगति पर सभी को जागरूक करने के लिए, द फ्यूचर ऑफ असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजीज़ (एआरटी) पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसमें इंदिरा आईवीएफ के सीईओ और सह संस्थापक डॉ. क्षितिज मुर्डिया, इंदिरा आईवीएफ के निदेशक और सह संस्थापक नितिज़ मुर्डिया, डेक्सियस यूनिवर्सिटी अस्पताल, बार्सिलोना (स्पेन) के डॉ. निकोलस पॉलीज़ोस, वरिष्ठ आईवीएफ सलाहकार डॉ. चैतन्य नागोरी तथा त्रिवेंद्रम मेडिकल कॉलेज में प्रजनन चिकित्सा के सहायक प्रोफेसर डॉ. पी. रमेश ने भाग लिया।

डॉ. गोयल की सेवाएं अब पिम्स में

उदयपुर (ह.सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा में वरिष्ठ शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरेश गोयल प्रोफेसर व हेड ऑफ डिपार्टमेंट के रूप में नियमित रूप से अपनी सेवाएं देंगे। उल्लेखनीय है कि डॉ. गोयल इससे पूर्व आरएनटी मेडिकल कॉलेज में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। डॉ. गोयल के पिम्स हॉस्पिटल में आने से यहां की पीडियाट्रिक की सेवाओं में विस्तार होगा।

तलवारों की गैर से.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

जितने भी सिपाही थे सबके जीमने जाने के लिए घर नियत कर दिये। ठीक समय पर सब पहुंच गये। इधर इशारा पाकर ढोल वाले ने पहला डाका लगाया कि सबके सम्मुख पत्तल-दोने रख दिये फिर दूसरे डाके में उन्हें भोजन परोस दिया गया और तीसरा डाका लगते ही एक साथ सिपाहियों के सिर तलवार से घाट उतारकर उन्हें वहीं गाड़ दिया गया। वह दिन आज ही का, चैत्रवदी बीज, जमराबीज का दिन था।

घासीबा ने बताया कि यह घटना महाराणा अमरसिंह (1599 ई.) के समय की है। तब जिस वेशभूषा में हमारे पुरखे थे, वही वेशभूषा आज भी हम लोग पहनते आ रहे हैं। यह सारी व्यूहरचना मधुश्यामजी के नेतृत्व में हुई थी जिनका ऊंकारेश्वर चौरा के पास ही एक मन्दिर बना हुआ है। जब भी कोई लड़का विवाह करने जाता है, सर्वप्रथम यहां आकर उन्हें धोकता (नमन करता) है। उसकी बरात यहां होकर निकलती है। कई घरों में जहां निर्माण कार्य हेतु खुदाई कराई गई तब उस समय अस्थिपंजर निकले हैं जो उस घटना की प्रामाणिक ताजगी प्रस्तुत करते हैं।

पन्द्रह मन गुड़ की भांग :

दिन को चौरे पर जाजम बिछती है जहां गांव के सारे लोग इकट्ठे होते हैं। जिनके घर में लड़के ने जन्म लिया होता है उससे 3 किलो और लड़की जनम पर डेढ़ किलो गुड़ लाकर वहां इकट्ठा किया जाता है। इस प्रकार जितना भी गुड़ इकट्ठा होता है उसे पानी में घोलकर मटके भर दिये जाते हैं। इसे गुड़ की भांग निकालना कहते हैं। खेल समाप्ति पर पुरुष-महिलाएं सभी इसे पीते हैं। प्रतिवर्ष लगभग-लगभग पन्द्रह-बीस मन गुड़ की भांग निकाली जाती है।

रात को नौ बजे करीब चौरे से जुपकर पांच मोहल्लों में मशालें जाती हैं। ये मशालची अपने-अपने नियत स्थान पर खड़े रहते हैं। तब मोहल्ले के सभी लोग तलवार, बन्दूकों से लैस हो यहां इकट्ठे होते हैं। औरतें भी अपने-अपने घरों से निकल आती हैं। उनके सिर पर जल भरे लोठे होते हैं जिनमें ढाक की लकड़ी (खांडा) रखी होती है। इस पानी में औरतें होलीथड़े जाकर होली ठण्डा करती हैं। चौरे पर ढोल निरन्तर बजते रहते हैं। ये ढोल 'वारी-ढोल' यानी युद्ध-ढोल कहलाते हैं। इस समय सारा वातावरण युद्धमय ही लगता है। पुरुष वीर योद्धा की पोशाक में तलवार, बन्दूक, ढाल, लाठी आदि से लैस होते हैं।

जब सब मशालची के वहां इकट्ठे हो जाते हैं तब सभी बन्दूकें छोड़ते हुए चौरे की ओर बढ़ते हैं। पांचों मोहल्ले के लोग जब बन्दूकों की गड़गड़ाहट में चौरे की ओर बढ़ते प्रवेश करते हैं तब का दृश्य ऐसा ही लगता है जैसे कहीं आक्रमण किया जा रहा है। सबमें एक विशेष प्रकार का जोश-होश और शूरापन बना छलकता है। देखने वालों की भीड़ इतनी जमा हो जाती है कि उस बड़े फैले चौरे पर पांव देने की जगह नहीं रहती है। आसपास के गांव के गांव इस गैर को देखने उलट पड़ते हैं।

आतिशबाजी और बन्दूकों के भड़ाकों के बाद महाजन लोग सबको गुलालमय कर देते हैं। गुलाल पड़ने के बाद ढोल वाले नीचे उतरकर होलीथड़े की ओर मुखातिब होते हैं। वहां पुरुष उस पूरे रास्ते सड़क के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं और बीच में औरतें जाती हैं और होली ठण्डी करती हैं। इधर ढोली अपने ढोल पर डाके देते हुए उस गांव की, उस घटना की, मेनारिया-पुरखों की वंशावली गाते हैं। इसमें लगभग आधा-पौन घण्टा लग जाता है। सभी लोग बड़े गौर से सारी गाथा-कथा सुनते हैं और उस बरसों पुरानी बीती घटना को याद कर नये-पुरानेपन में खो जाते हैं।

गैर का लाजवाब शूरापन :

इसके बाद सारा जुलूस पुन: चौरे पर आता है और फिर लंबी फैली गोलाई लिये गैर प्रारम्भ हो जाती है। चबूतरे पर ढोल की किड़किड़ाहट तेजी पकड़ लेती है और सारे वीर अपने-अपने हाथों में तलवारें, छड़ियें लिये गैर-गोलाई में लगभग डेढ़ घण्टे तक खूब छककर खेलते रहते हैं। इस समय दोनों ढोलवादक उस पूरे चबूतरे पर आमने-सामने ही घूमते बजाते चलते हैं। कभी-कभी दूसरे लोग अपने हाथों में कामड़ियां ले ढोल को तेजी से डाके देते देखे जाते हैं परन्तु ढोल की गति में कहीं कोई शिथिलता नहीं आ पाती है। तलवारों का यह सारा खेल ही ढोल के ढमाके से जुड़ा रहता है। इसलिए ढोल बजाने वालों की हिम्मत की सभी लोग सराहना किये नहीं थकते हैं।

मैंने देखा, पूरा मेनार इस खुशी में फूला नहीं समा रहा है। छोटे, बड़े, बूढ़े, बालक, बालिका सबके सब एक विशेष हरख और हूंस लिये हैं। सब घरों में चहल-पहल और विशेष उत्सव उमाव है। सबके सब अपने शौर्य में बांके बने हुए हैं। हर व्यक्ति अच्छा-से-अच्छा योद्धा होना चाह रहा है। सबके पास बन्दूक, तलवार है। छोटे-छोटे बच्चे तक तलवार और लट्ठ चलाने को मचले हैं।

लगभग दो बजे रात तब यह गैर, यह खेल, यह युद्ध-अवतरण चलता रहता है। देखने वाले सब स्तब्ध बने खेलने वालों के साथ खोये लगते हैं। इतने लम्बे समय तक इस बहादुरी से खेलने की हिम्मत साधारण हिम्मत नहीं है मगर खेलने वाला कोई हांपता-कांपता नहीं लगता। कहते हैं, इस दिन सबमें ही शूरापन चढ़ आता है।

मेनार की यह धाक और हाक आसपास के पूरे इलाके पर है। केवल विशिष्ट त्यौहार उछब पर ही इनका विशिष्ट रंग रौब नहीं छलकता। हर पल, हर घड़ी ही यहां के लोग बन्दूक की तरह अपने में अपने शौर्य को ठांडे रहते हैं इसीलिए यहां आज भी वही परम्परा पूरे जोर-शोर पर है और यह कहावत भी लोगों की जबान पर चढ़ी रहती है- 'विनोता री बावड़ी / अठाणा रा मेल / बिलोदा रो घूघरो ने मेणार री गैर।'

उदयपुर में देश का पहला इलेक्ट्रीशियन जॉब फेयर

उदयपुर (ह.सं.)। कोई अपनी डिग्री से अच्छी नौकरी की आस मे चला आया तो किसी को उसका अनुभव खींच लाया। नियोक्ताओं की पारखी नज़रों ने जब अच्छे करियर का भरोसा दिलाया तो चेहरे खिल उठे। जिन्हें अवसर नहीं मिले वे अपना बायोडेटा देकर आगे मिलने वाले अवसरों के लिये आश्वस्त हुए। मौका था राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) उदयपुर में आयोजित हुए इलेक्ट्रीशियन जॉब फेयर का। इसमें इलेक्ट्रिकल से जुड़ी 20 से अधिक कंपनियों ने हिस्सा लिया। जॉब फेयर में बड़ी संख्या में प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित, सेवारत इलेक्ट्रीशियन तथा आईटीआई के छात्रों ने प्रतिभागिता की जिसमें विभिन्न नामी कंपनियों के स्टॉल लगाये गये जिन पर प्रतिभागियों ने बायोडेटा एवं इंटरव्यू देकर रोजगार के नये अवसर तलाशे।

जॉब फेयर की साझेदार लेग्रांड इंडिया कंपनी की सीएसआर प्रमुख अबिदा अनीज ने बताया कि जॉब फेयर से पहले तीन दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा गया। इसमें उदयपुर और आसपास के चार सौ से अधिक इलेक्ट्रीशियन का स्कील डवलपमेंट किया गया। बड़ी कंपनियों के साथ जुड़कर नौकरी के तौरतरीकों के बारे में बताया गया तथा आधुनिक उपकरणों एवं प्रौद्योगियों का प्रशिक्षण भी दिया गया। आबिदा ने कहा कि इलेक्ट्रिकल के क्षेत्र में काम करने वाले लाखों प्रशिक्षित लोग डिग्री के अभाव में नौकरी के अच्छे अवसर नहीं प्राप्त कर पाते हैं जबकि कइयों को 20 से 25 साल तक का अनुभव होता है। जॉब फेयर का मकसद ऐसे लोगों को सर्टिफिकिट प्रदान करना तथा जॉब देने वाली कंपनी को भी ऐसे लोगों से रूबरू करवाना है। अबिदा अनीज ने बताया कि लेग्रांड इंडिया कंपनी ने पिछले 4 वर्षों में 15 स्मार्ट शहरों में 7500 से अधिक इलेक्ट्रीशियन को अपनी सीएसआर के तहत आरपीएल-इलेक्ट्रीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षित किया है। इसके अलावा 2024 तक 15 हजार इलेक्ट्रीशियन को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस सीएसआर परियोजना के तहत महिला सशक्तिकरण मिशन को बढ़ाया जाएगा।

जॉब फेयर में उपनिदेशक कौशल नियोजन एवं उद्यमिता विभाग क्षेत्रीय कार्यालय उदयपुर के राजकुमार बागोरा, आईटीआई उदयपुर के प्रधानाचार्य अनिल खंडेलवाल तथा विश्ववैश्वर्या फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। जॉब फेयर में जीएस मोटर्स, ट्रेकमार्ग, आरवीपीएम, एडवांटिज, क्वाड्ज, इकोन ग्रुप ऑफ कंपनीज, पालीवाल पॉवर सर्विसेज, शाह इलेक्ट्रिकल्स, गोधा इंजीनियर, एचआरएच होटल्स, सरस्वती मेकेट्रोनिक्ट सेंटर, लेकेंड, फाइन स्प्लेस इंफोटेक आदि कंपनिया शामिल थी। कई कंपनियां वर्चुअल भी उपस्थित थी।

लेग्रांड ग्रुप इंडिया के प्रबंध निदेशक और सीईओ टोनी बेरलैंड ने कहा कि अभी तक 7500 इलेक्ट्रीशियन को प्रशिक्षित व प्रमाणित कर चुके हैं और वर्ष 2024 तक 15 हजार इलेक्ट्रीशियन को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है।

डिजिटल बैंकिंग सेवाएं अब पड़ोस की दुकान पर

उदयपुर (ह. सं.)। भारत सरकार के डिजिटल इडिया के सपने को साकार करने और आमजन तक बैंकिंग सेवाओं को समयबद्ध रूप से सर्व सुलभ करवाने के उद्देश्य से सरकारी स्तर पर कई प्रयास किए जा रहे हैं तथा नए उपक्रमों को इस क्षेत्र में अवसर दिया जा रहा है। यह कहना है फिनो पेमेंट्स बैंक के मुख्य विपणन अधिकारी, आनंद भाटिया का।

भटिया ने कहा कि सरकार की ओर से पैमेंट बैंक सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है व इसकी जिम्मेदारी बैंकिंग क्षेत्र के महारथियों को दी गई है। इन पेमेंट बैंकों का स्वरूप बैंकों जैसा ही है मगर यह हर आमजन को आसपास की दुकानों, पेट्रोल पम्प साहित अन्य आउटलेट्स पर बैंकिंग सेवाएं बहुत ही आसानी से प्रदान कर रहे हैं। डिजिटल आर्थिक सशक्तीकरण के इस अभियान में ग्राहकों को अपने अकाउंट में पैसा जमा करवाना, निकासी करना, पानी-बिजली के बिल जमा करना, इंश्योरेंस की किस्त जमाकरना सहित बैंकिंग संबंधी सभी कार्यों की सुविधा दी जा रही है। मकसद है बैंकों पर बोझ कम करना तथा लाइनों व बोझिल प्रक्रिया से मुक्त करना ताकि एक क्लिक पर ही सभी सेवाएं ली जा सकें। इसी के मद्देनजर सरकार ने फिनो पेमेंट बैंक को बैंकिंग के समस्त अधिकार प्रदान किए हैं जिसके माध्यम से देशभर में बैंकिंग सेवाएं प्रदान की जा रही है।

आनंद भाटिया बताया कि फिनो देश में शेयर बाजार में लिस्ट होने वाला पहला डिजिटल बैंक है। एक फिनो मर्चेंट पॉइंट स्थानीय किराना स्टोर, मेडिकल शॉप, डेयरी आउटलेट या मोबाइल रिपेयर शॉप है। ये बिंदु डिजिटल बैंकिंग सेवाओं को अपनाने और उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पूरे देश में, फिनो के पास बैंकरों के रूप में ऐसे 8.6 लाख से अधिक छोटे व्यापारियों का नेटवर्क है। राजस्थान में, फिनो के पास 26000 से अधिक पड़ोस बैंकिंग बिंदुओं का नेटवर्क है जिसमें ईमित्र आउटलेट और 900 से अधिक भारत पेट्रोलियम (बीपीसीएल) पेट्रोल पंप शामिल हैं। इन बिंदुओं पर, ग्राहक नया बैंक खाता खोल सकते हैं, जमा कर सकते हैं, निकासी कर सकते हैं, धन हस्तांतरण और बिल भुगतान कर सकते हैं। गोल्ड लोन, हेल्थ, जनरल इंश्योरेंस जैसे थर्ड पार्टी ऑफर का लाभ उठा सकते हैं और यहां तक कि लोन की ईएमआई का भुगतान भी कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि हमें शोध से पता चला कि डिजिटल लेन-देन में कस्टमर्स को अपने विश्वास को मजबूत करने के लिए पासबुक की जरूरत होती है। फिनो ने भौतिक पासबुक उपलब्ध करवाई है। फिनो बैंक शाखाओं में बच्चों के भी खाते खुलवाए जा सकते हैं।

दो मुकरियां

(1)

देर रात चुपके से आया।
सोई नींद मुझे उचकाया।।
जब देखूं तब खटपट-खटपट।
सोने दे नहीं पकड़ न आया।।
का सखि साजन? ना सखि चूहा।।

(2)

रगड़-रगड़ कर धोये घाट।
बिन पानी ही स्फटिक पाट।।
गरड़ मरड़ जब बोलण लागी।
का सखि ऊंट? ना सखि घट्टी।।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (7)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

कुमारिकाओं के सांझी गीत

श्राद्ध पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक बालिकाएँ साँझी का त्यौहार मनाती हैं।

सांझी कोट

प्रतिदिन संध्या को गोबर की सहायता से द्वार के बाहर एक ओर संझ्या की नाना परिकल्पनाएँ बनाकर उन्हें रंगबिरंगी फूलों से सजाती हैं। आरती करती हैं और संझ्या विषयक गीत गाती हैं। इन्हीं दिनों मंदिरों में भी पानी तथा जमीन पर रंगबिरंगी संझ्याएँ कोरी जाती हैं। नाथद्वारा के श्रीनाथजी के कमल चौक में केले के पत्तों की संझ्याएँ कोरी जाती हैं।

इनके अलावा फूल पत्तों तथा साग सब्जियों एवं मिठाइयों की संझ्याओं का प्रचलन भी रहा है। इन संझ्याओं में कृष्णलीला की विविध झांकियां प्रदर्शित की जाती हैं। राजस्थान के अतिरिक्त मालवा, पंजाब, ब्रज, निमाड़ आदि में भी सांझी का खूब प्रचार रहा है। यहाँ सांझी के कुछ गीत प्रकाशित किये जा रहे हैं जो बीकानेर से श्री दीनदयाल ओझा द्वारा प्राप्त किये गये हैं।

(1)
आंबा मोर्‌या लींबू मोर्‌या,
मोर्‌या दाड़म दाख /
सरी किसनजी सेवा बैठा,
उठो राणी पियो पाणी,
झालर बाजे, घड़ियाल बाजे,
उगा तारा संझा फूली
छोड़ो मुन सीताफल लाग्या
मुनीजी की मुन छूटी
केसवजी का कंवाड़ खुल्या
मुनी बाबा राम राम।

(2)
संझ्या थूं बड़ा बाप की बेटी
खाये खाजा रोटी
पेरे माणक मोती
संझ्या एवड़ो हो
माथे बेवड़ो हो
म्हारा डावा हाथ करेलो हो
म्हारा जीमणा हाथ मोती हो
म्हारी चोटी लेरिया लेती हो।

(3)
कुवा पिछाड़ी चार कबूतर
कौन सो वीरो गोरो रे सोवेटिया
चांद सूरज वीरो गोरे रे सोवेटिया
चांद सूरज वीरो ने मूंदड़ी पायो
जाय बहू ने सोंप्यो रे सोवेटिया
बहू सपूतन ओढ़ न जाने
पेहर न जाने।
कौन सी नणद बुलाऊं रे सोवेटिया
संझ्या नणद बुलाऊं रे सोवेटिया
संझ्या की तो ऊंची नीची नाक
कमल की चोटी
मोत्यां मांग पुराऊं रे सावेटिया।

(4)
जीरो लो भाई जीरो लो
जीरो लेईने संझ्यां ने दो

जल सांझी बनाते कलाकार राजेश वैष्णव

संझ्या का पीहर सांगा सोल
परण पधार्‌या घोड़ा उकार्‌या

गोबरफूली सांझी

राम थारी चाकरी गुलाम म्हारो भेस
छोड़ो म्हारी चाकरी पधारो थांका देस।

(5)
दो सोना री चिरकली
दो रूपा री चिरकली
उड़ती-उड़ती संझ्या के सासरे जाय
संझ्या बाई वीरो पिछाणलो
वीरो लांबो घोड़ो पातलो
सेर गली में खेले रे एकलो
दई चमाबे चौखले।

(6)
संझ्या बाई के सासरे जावांगा।
खोटो रोटो खावांगा
संझ्या बाई की सासू दूतड़ली
ऐसी दूंदारी के चमका की
काम कराऊं तड़का से
हूँ बैठूं गादी पै
उने बिठाऊं खूंटी पै।

(7)
नानी सी गाड़ी रड़कती जाय
जी में बैठा संझ्या बाई
घाघरियो घमकाता जाये
चूड़लो चमकाता जाये
बाई की नथनी झोला खाय।

- क्रमश :

जल संकट के समाधान में आमजन की भागीदारी जरूरी

उदयपुर (ह. सं.)। देश में जल संसाधन संकट में है। नदियां प्रदूषित हो रही हैं, जल संचयन तंत्र बिगड़ रहे हैं। भूजल स्तर लगातार नीचे जा रहा है। ऐसे में यह जरूरी है कि जल संकट व जल के समुचित प्रबंधन की बात आम जनता की चर्चा व समाधान में भागीदारी का विषय बने। यह विचार ऐश्वर्या कॉलेज की ओर से रोटरी क्लब उदयपुर मीरा, रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3050, रोटरी क्लब इंदौर गेलेक्सी, रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3040 तथा ग्रीन लीफ एनजीओ के साझे में हुए सेमीनार में उभर कर सामने आये। मुख्य अतिथि रिटायर्ड आईएफएस राहुल भटनागर थे। अध्यक्षता पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय के नोडल ऑफिसर रहे भूजल वैज्ञानिक एवं सुधीन्द्रमोहन शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि सी.एम. बेन्द्रे थे। इस अवसर पर रोटरी क्लब मीरां की अध्यक्ष सुषमा कुमावत, ऐश्वर्या कॉलेज की सीएमडी डॉ. सीमासिंह, रोटेरियन सोनिया सोनी, प्रियंका भाणावत उपस्थित थे।

पहले सत्र में 'ट्रेडशनल विस्डम एंड न्यू जनरेशन पर्सपेक्टिव्ज' पर राहुल भटनागर ने कहा कि विशेषज्ञों ने हमेशा से जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है जिन्हें भविष्य में प्रबंधित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। नीति आयोग के आंकड़े बताते हैं कि भारत के शहरी क्षेत्रों में 970 लाख लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता है जबकि देश के ग्रामीण इलाकों में तकरीबन 70 प्रतिशत लोग प्रदूषित पानी पीने और 33 करोड़ लोग सूखे वाली जगहों में रहने को मजबूर हैं।

मुख्य वक्ता सुधीन्द्रमोहन शर्मा ने बताया कि दुनिया का नौवां सबसे बड़ा फ्रेश वॉटर रिज़र्व भारत के पास है। उसके बाद भी पानी की समस्या होना साफ दर्शाता है कि जल प्रबंधन में दोष है जिसे दूर किया जाना चाहिए। देश की जनता 85 प्रतिशत जल भूजल से प्राप्त करती है। भूजल को दूषित होने से बचाना जरूरी है। स्वच्छ जल की उपलब्धता, निरंतरता और गुणवत्ता के लिए कम्यूनिटी से पार्टनरशिप करते हुए उसके हाथों में जल स्त्रोतों के प्रबंधन का जिम्मा देने की जरूरत है। पुराने जल स्त्रोतों को रिचार्ज करें, गांवों पर फोकस करें, सिवरेज का समुचित प्रबंधन करें तो जल भी और कल भी का सपना पूरा किया जा सकता है।

दूसरे सत्र में 'द न्यू नॉर्मल' विषय पर बोलते हुए स्पीकर सी.एम. बेन्द्रे ने कहा कि कोविड-19 महामारी ने पूरी दुनिया को बदल कर रख दिया। संकट के इस दौर के असर इतने व्यापक हैं कि उनका मूल्यांकन सदियों तक किया जाता रहेगा। हम धीरे-धीरे एक पोस्ट कोविड व्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं। पोस्ट कोविड के नए दौर में कई सारी बातें न्यू नॉर्मल के तौर पर सामने आ रही हैं जिनके साथ हमें जीना सीखना होगा। हमें कोरोना के नए वेरियंट के साथ जीते हुए ऑनलाइन कार्य पद्धति के साथ आगे बढना़ होगा। न्यू नार्मल का नया अर्थ तंत्र भी हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है, हमें उसके साथ जीते हुए तरक्की के नए रास्ते खोजने होंगे। समग्र अर्थों में देखें तो हमारी पीढ़ी का पूरा जीवन ही नए सिरे से परिभाषित होता दिखाई दे रहा है।

घर पर साथ बैठकर परिवार का भोजन करना, बाजार की चीजों से परहेज करना, दूसरों के सुख-दुख में काम आना, आस-पड़ोस वालों की खबर रखना आदि न्यू नॉर्मल हैं। कोविड ने कई बच्चों को अनाथ कर दिया है। हमें उनके लिए काम करना है। कोविड के बाद आर्थिक तंगी से आत्महत्या करने वालों की दर बढ़ गई है। हमें डिप्रेशन में आए ऐसे लोगों को बचाने का हर संभव प्रयास करना है। कोविड ने जो सिखाया, उसके प्रभाव बरसों बरस तक हमारी पीढ़ियों तक में संचरित होते रहेंगे। भारत इस दौर से दृढ़ता से उभर कर नए शिखरों की और प्रखरता से उन्नत होगा, यही उम्मीद है। इस सत्र के मुख्य अतिथि रिटायर्ड आईएफएस राहुल भटनागर थे।

सुषमा कुमावत ने वर्ष में एक वृक्ष लगाकर पर्यावरण मित्र बनने का संदेश दिया। डॉ. सीमासिंह ने पर्यावरण और जल से जुड़े मुद्दों पर अपने विचार प्रकट किये।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।